# परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, इन्दौर

## कक्षा - आठ  विषय - संस्कृत

## पाठ - कण्टकेनैव कण्टकम्

## मौड्यूल - 2


प्रस्तुतकर्त्री

मंजू देवी, प्र. स्ना. अ.(हिन्दी व संस्कृत)

# लिखितरूप

बच्चो जैसा कि मैंने कल आपको बताया था कि "कण्ट्केनैव कण्टकम्" अर्थात कण्ट्केन एव कण्ट्कम् । इसका अर्थ है काँटे से ही काँटा निकलता है| कोई चंचल नाम का शिकारी था| एक बार उसने वन में जाल बिछाया, उस जाल में एक बाघ फँस गया| बाघ की प्रार्थना पर शिकारी ने उस बाघ को जाल से बाहर निकाल दिया| बाघ ने शिकारी से पानी माँगा| तो आज हम उससे आगे अध्ययन करेंगे पाठ पाँच के दूसरे भाग का ।

# मूलपाठः

व्याघ्रः जलं पीत्वा पुनः व्याधमवदत्, 'शमय मे पिपासा। साम्प्रतं बुभुक्षितोऽस्मि। इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि।' चञ्चलः उक्तवान्, 'अहं त्वत्कृते धर्मम् आचरितवान्। त्वया मिथ्या भणितम्। त्वं मां खादितुम् इच्छसि?'

# शब्दार्थ :

साम्प्रतम् - इस समय।  बुभुक्षितः - भूखा।

त्वत्कृते - तुम्हारे लिए। भणितम्-कहा।
माम्-मुझको।। आचरितवान् - आचरण किया।

## सरलार्थः

बाघ जल पीकर फिर शिकारी से बोला, 'मेरी प्यास शान्त हो गई है। इस समय मैं भूखा हूँ। अब मैं तुम्हें खाऊँगा।' चंचल बोला, 'मैंने तुम्हारे लिए धर्म कार्य किया। तुमने झूठ बोला। तुम मुझको खाना चाहते हो?'

## मूलपाठः

व्याघ्रः अवदत्, "अरे मूर्ख! क्षुधार्ताय किमपि अकार्यम् न भवति। सर्वः स्वार्थं समीहते।' चञ्चलः नदीजलम् अपृच्छत्। नदीजलम् अवदत्, 'एवमेव भवति, जनाः मयि स्नानं कुर्वन्ति, वस्त्राणि प्रक्षालयन्ति तथा च मल-मूत्रादिकं विसृज्य निवर्तन्ते, वस्तुतः सर्वः स्वार्थं समीहते।' चञ्चल: वृक्षम् उपगम्य अपृच्छत्। वृक्षः अवदत्, 'मानवाः अस्माकं छायायां विरमन्ति। अस्माकं फलानि खादन्ति, पुनः कुठारैः प्रहृत्य अस्मभ्यं सर्वदा कष्टं ददति। यत्र कुत्रापि छेदनं कुर्वन्ति। सर्वः स्वार्थं समीहते।'

## शब्दार्थ:

क्षुधार्ताय - भूखे के लिए। अकार्यम् - बुरा काम।

समीहते - चाहते हैं। नदीजलम् - नदी का जल। मयि - मुझ में। प्रक्षालयन्ति - धोते हैं।

विसृज्य - छोड़कर। निवर्तन्ते - चले जाते हैं।

उपगम्य - पास जाकर। छायायाम् - छाया में विश्राम

कुठारैः - कुल्हाड़ियों से। प्रहृत्य - प्रहार करके।

ददति - देते हैं। छेदनम् - काटना।

धर्मे - धर्म में।

## सरलार्थ :

बाघ बोला-'अरे मूर्ख! भूखे के लिए कुछ भी बुरा नहीं होता है। सभी स्वार्थ की सिद्धि चाहते हैं।' चंचल ने नदी के जल से पूछा। नदी का जल बोला, 'ऐसा ही होता है, लोग मुझमें नहाते हैं, कपड़े धोते हैं तथा मल

और मूत्र आदि डाल कर वापस लौट जाते हैं, वास्तव में सब स्वार्थ को ही (सिद्ध करना) चाहते हैं।' चंचल ने वृक्ष के पास जाकर पूछा। वृक्ष बोला, "मनुष्य हमारी छाया में ठहरते हैं। हमारे फलों को खाते हैं, फिर कुल्हाड़ियों से चोट मारकर हमें सदा कष्ट देते हैं। कहीं-कहीं तो काट डालते हैं। धर्म में धक्का (कष्ट) और पाप (करने) में पुण्य होता ही है।'

## मूलपाठः

समीपे एका लोमशिका बदरी-गुल्मानां पृष्ठे निलीना एतां वार्ता शृणोति स्म। सा सहसा चञ्चलमुपसृत्य कथयति- "का वार्ता? माम् अपि विज्ञापय।" सः अवदत्-'अहह मातृस्वसः! अवसरे त्वं समागतवती। मया अस्य व्याघ्रस्य प्राणाः रक्षिताः, परम् एषः मामेव खादितुम् ति।" तदनन्तरं सः लोमशिकायै निखिल कथा न्यवेदयत्।

## शब्दार्थः

समीपे - पास में। लोमशिका - लोमड़ी।

बदरी-गुल्मानाम् - बेर की झाड़ियों के। पृष्ठे - पीछे।

निलीना - छुपी हुई।  एताम् - इस (को)।

उपसृत्य - समीप जाकर।  विज्ञापय - बताओ।

अहह - अरे!।  मातृस्वसः - हे मौसी।

अवसरे - उचित समय पर।  समागतवती - पधारी/आई।

रक्षिताः - बचाए गए।  मामेव - मुझको ही।

निखिलाम् - सम्पूर्ण, पूरी।  न्यवेदयत् - बताई।

## सरलार्थः

पास में एक लोमशिका (लोमड़ी) बेर की झाड़ियों के पीछे छिपी हुई इस बात को सुन रही थी। वह अचानक चंचल के पास जाकर कहती है-'क्या बात है? मुझे भी बताओ।' वह बोला-'अरी मौसी! ठीक समय पर तुम आई हो। मैंने इस बाघ के प्राण बचाए, परन्तु यह मुझे ही खाना चाहता है।' उसके बाद उसने लोमड़ी को सारी कहानी बताई (सुनाई)।

# अभ्यासः

**प्रश्न:1. एकपदेन उत्तरं लिखत-(एक पद में उत्तरलिखिए-)**

**(क) कस्मै किमपि अकार्यं न भवति?**

**उत्तरम्: - क्षुधार्ताय |**

**(ख) बदरी-गुल्मानां पृष्ठे का निलीना आसीत्?**

**उत्तरम्:-लोमशिका|**

**प्रश्नः2.पूर्ण वाक्येन उत्तरत-(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए-)**

**(क) व्याघ्रस्य पिपासा कथं शान्ता अभवत्?**

**उत्तरम्: - व्याघ्रस्य पिपासा जलं पीत्वा शान्ता अभवत्।**

**(ख) जलं पीत्वा व्याघ्रः किम् अवदत्?**

**उत्तरम्: - जलं पीत्वा व्याघ्रः अवदत्-'साम्प्रतम् अहम् बुभुक्षितः अस्मि, इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि।'**

(ग) चञ्चलः 'मातृस्वसः!' इति को सम्बोधितवान्?

उत्तरम्: - चंचलः 'मातृस्वसः!' इति लोमशिकाम् सम्बोधितवान्।

प्रश्नः 3. रेखांकित पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणम् - (रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न का निर्माण कीजिए)

(क) चञ्चल: वृक्षम् उपगम्य अपृच्छत्।
उत्तरम्: - चञ्चल: कम् उपगम्य अपृच्छत् ?

(ख) व्याघ्रः लोमशिकायै निखिल कथां न्यवेदयत्।
उत्तरम्: - व्याघ्रः कस्यै निखिल कथां न्यवेदयत् ?

(ग) मानवाः वृक्षाणां छायायां विरमन्ति।।
उत्तरम्: - मानवाः केषाम् छायायांविरमन्ति?

(घ) व्याघ्रः नद्याः जलेन व्याधस्य पिपासामशमयत्।
उत्तरम्: - व्याघ्रः कस्याः जलेन व्याधस्य पिपासाम् शमयत्?

इति